

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

पाठ्यक्रम - M.A. - दर्शन
वर्ष- 2022-2023



B.O.S. - दिनांक- 05 मई, 2022

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम- एम.ए.- (दर्शनशास्त्र)

प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

कुल सामान्य नियम एवं प्रस्तावना

- ❖ प्रस्तुत पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा, जिसमें चार सत्र होंगे।
- ❖ प्रत्येक सत्र में चार प्रश्नपत्र होंगे, किन्तु अन्तिम सत्र में पाँचवाँ प्रश्नपत्र वैकल्पिक रूप से लघु शोध प्रबन्ध/निबन्ध परक होगा।
- ❖ प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा।
- ❖ प्रत्येक पत्र में 30 अंकों की आन्तरिक एवं 70 अंको की बाह्य परीक्षा होगी।
- ❖ परीक्षा का माध्यम इच्छानुसार हिन्दी/संस्कृत/अंग्रेजी होगा।
- ❖ प्रत्येक परीक्षा का निर्धारित समय 3 घण्टे होगा।
- ❖ परीक्षा में 40% अंक प्राप्त करने वाले छात्र को ही उत्तीर्ण माना जायेगा।

शिक्षण और मूल्यांकन की योजना

PROPOSED SCHEME FOR CBCS SYSTEM IN MA (DARSHAN)

Semester - I

Sl.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit	Evaluation Scheme			Total
			L	T	P		Sessional		External	
							CT	TA	SEE	
1	MD-CT-101	वैदिक साहित्य एवं सारख्य-योग-I	4	1	0	5	20	10	70	100
2	MD-CT-102	न्याय वैशेषिक-I	4	1	0	5	20	10	70	100
3	MD-CT-103	वेदांत-मीमांसा-I	4	1	0	5	20	10	70	100
4	MD-CT-104	वैदिकेतर दर्शन-I	4	1	0	5	20	10	70	100
5	MD-AEC01-105	English Communication**	2	0	0	2				
TOTAL						20	Total			400

Semester - II

Sl.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit	Evaluation Scheme			Total
			L	T	P		Sessional		External	
							CT	TA	SEE	
1	MD-CT-201	सारख्य-योग-II	4	1	0	5	20	10	70	100
2	MD-CT-202	न्याय वैशेषिक-II	4	1	0	5	20	10	70	100
3	MD-CT-203	वेदांत-मीमांसा-II	4	1	0	5	20	10	70	100
4	MD-CT-204	वैदिकेतर दर्शन-II	4	1	0	5	20	10	70	100
5	MD-SEC01-205	योग विज्ञान*	8	0	2	10				
TOTAL						20	Total			400

Semester - III

Sl.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit	Evaluation Scheme			Total
			L	T	P		Sessional		External	
							CT	TA	SEE	
1	MD-CT-301	सारख्य-योग-III	4	1	0	5	20	10	70	100
2	MD-CT-302	न्याय वैशेषिक-III	4	1	0	5	20	10	70	100
3	MD-CT-303	वेदांत-मीमांसा-III	4	1	0	5	20	10	70	100
4	MD-CT-304	वैदिकेतर दर्शन-III	4	1	0	5	20	10	70	100
5	MD-GE*-305 MD-GE*-306 MD-GE*-307	भाषा विज्ञान मनोविज्ञान-I** गुप्तकाल का इतिहास-I	4	1	0	5	20	10	70	100
6	MD-SEC02*-306 MD-SEC02*-307	भारतीय संगीत- गायन** भारतीय संगीत- वादन**	8	0	2	2				
TOTAL						25	Total			500

Semester - IV

Sl.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit	Evaluation Scheme			Total
			L	T	P		Sessional		External	
							CT	TA	SEE	
1	MD-CT-401	सारख्य-योग-IV	4	1	0	5	20	10	70	100
2	MD-CT-402	न्याय वैशेषिक-IV	4	1	0	5	20	10	70	100
3	MD-CT-403	वेदांत-मीमांसा-IV	4	1	0	5	20	10	70	100
4	MD-CT-404	वैदिकेतर दर्शन-IV	4	1	0	5	20	10	70	100
5	MD-GE*-405 MD-GE*-406 MD-GE*-407	संस्कृत साहित्य मनोविज्ञान-II** गुप्तकाल का इतिहास-II	4	1	0	5	20	10	70	100
6	MD-AEC02-406	लघु शोध लेखन	2	0	0	2				
TOTAL						25	Total			500
GRAND TOTAL (Credits)						90	GRAND TOTAL (Marks)			1800

GE* निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय का चयन करें। कम से कम 15 विद्यार्थियों के समूह बनने पर ही उपरोक्त तीनों विषयों से कोई एक विषय प्रारम्भ किया जायेगा।

** वर्णित विषय अन्य पाठ्यक्रमों से आयातित हैं।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-प्रथम

MD-CT-101 - वैदिक साहित्य एवं सांख्य-योग-1

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योग एवं सांख्य के मौलिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सुबोध कराना।
- वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों से परिचित करवाना।
- वेद व वेद से सम्बन्धित साहित्यों का परिचय कराना।

इकाई प्रथम- वैदिक साहित्य का परिचय-

विषय -

- वैदिक साहित्य का परिचय
- वेदों की रचना - अपौरुषेय या पौरुषेय (तुलनात्मक अध्ययन)
- वेदों में बहुदेवतावाद, एकेश्वरवाद (तुलनात्मक अध्ययन)
- वेद एवं उपनिषदों में सृष्टिरचना विषय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006

इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन-1

सांख्यदर्शन- प्रथम अध्याय (विज्ञानभिक्षु भाष्य सहित)

विषय- त्रिविधदुःख, 25 तत्त्वों का निरूपण, भगवद् प्राप्ति हेतु तीन प्रकार के अधिकारी, प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण का निरूपण, चेतन पर्यन्त भोगप्राप्ति, प्रकृति की परार्थता, शरीरादि से भिन्न पुमान्, पुरुष बहुत्व, अद्वैतवाद का खण्डन, साक्षित्व निरूपण, नित्यमुक्तत्व इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन- (विज्ञानभिक्षु भाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्बा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई तृतीय- योग दर्शन-1 योगदर्शन - समाधिपाद (व्यासभाष्य सहित)

विषय- योग का स्वरूप, पञ्चवृत्तियाँ, द्रष्टा स्वरूप, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञात, असम्प्रज्ञात-ईश्वर प्रणिधान, ईश्वर का स्वरूप, चार प्रकार की भावनाएँ, समापत्ति, अध्यात्मप्रसाद, ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्बीज समाधि इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखना।

परिणाम-1. योग एवं सांख्य के मौलिक सिद्धान्तों का परिचय।

2. योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
3. वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों का परिचय।
4. वेद व वेद से सम्बन्धित सहित्यों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- भारतीय दर्शन (डॉ० राधा कृष्णन्), भारतीय दर्शन का इतिहास-प्रथम भाग (डॉ० जयदेव वेदालंकार)। सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनि भाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्द प्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-द्वितीय

MD-CT-102 - न्याय-वैशेषिक-1

(70+30=100) यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का अवबोध कराना।
- न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थव भाष्यार्थ को सहज एवं रीति से हृदयङ्गम कराना।
- न्याय व वैशेषिक के साधर्म्य व वैधर्म्य से अवगत कराना।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन-1

प्रथम अध्याय

(वात्स्यायनभाष्य सहित)

विषय - तर्क पर्यन्त षोडश पदार्थों का उद्देश्य व लक्षण निरूपण, दोष, प्रवृत्ति जन्मदुःख निरूपण, तत्त्वज्ञान-स्वरूप निर्देश, शास्त्र की त्रिविध प्रकृति, प्रत्यक्ष अनुमान-उपमान शब्द लक्षण, आत्मानुमापक हेतुओं की व्याख्या, शरीरइन्द्रिय-भूत, अर्थ व बुद्धि का लक्षण व निरूपण, अपवर्ग लक्षण, मोक्ष में नित्यसुख अभिव्यक्ति का पूर्व पक्ष तथा उसका समाधान, दृष्टान्त सिद्धान्त लक्षण निरूपण, तर्क की तत्त्वज्ञानार्थता। पञ्चावयव व विभाग निरूपण, वातजल्पवितण्डा, हेत्वाभास निरूपण, छल लक्षण, छल के भेद, जातिनिग्रहस्थान निरूपण इत्यादि।

पञ्चमाध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित)

विषय - 24 प्रकार की जातियों का वर्णन, षट्पक्षी निरूपण, 22 निग्रहस्थान के विभाग इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग)
वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन-2

प्रथम अध्याय- धर्म का स्वरूप, द्रव्यादि षट् (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष समवाय) पदार्थों का तत्त्वज्ञान निःश्रेयस का साधन कैसे? गुणों व कर्मों का उद्देश्य, द्रव्यादि षट्पदार्थों का साधर्म्य-वैधर्म्य से निरूपण, कारण के अभाव से कार्य का अभाव, सत्ता व सत्ता सामान्य का लक्षण, गुणत्व गुणों से भिन्न, कर्मत्व कर्मों से भिन्न है इत्यादि।

द्वितीयाध्याय- पृथ्वी, जल, तेज व वायु का लक्षण, आकाश में रूपादि गुण नहीं, परमाणु नित्य है, वायु नाना है, सृष्टि संहार विधि, आकाश द्रव्य है, एक है, नित्य है। वस्त्र में पुष्पादिगन्ध औपाधिक, उष्णता-तेज में नैणर्गिक है, शीतता-जल में नैसर्गिक है, काल द्रव्य है, नित्य है, एक है, दिशा का लक्षण, नित्यत्व, एकत्व, भेद औपाधिक, दिक् प्रकरण, शब्द प्रकरण निरूपण इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

इकाई तृतीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि। (अनुमान खण्ड)।

विषय- परामर्श, करण, व्याप्ति, पक्ष व हेत्वाभास आदि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि-विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्यविरचिता

प्रकाशक- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, के. 37/117, गोपालमन्दिर लेन, पो. बा. नं. 1129, वाराणसी-221001

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।

- 30

परिणाम-1. न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का परिचय।

2. न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज एवं रीतिबद्ध परिचय।

3. न्याय व वैशेषिक के साधर्म्य व वैधर्म्य का विवरण।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्यायदर्शन (डॉ० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), दुण्डिराजशास्त्री। (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-तृतीय

MD-CT-103 - वेदान्त-मीमांसा-1

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त व मीमांसा के मौलिक सिद्धान्तों से परिचय कराना।
- वेदान्त के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को अध्येता को अवगत कराना।
- वेदान्त के वास्तविक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- मीमांसा के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराना।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन- 1

(ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- प्रथमपाद व द्वितीयपाद

विषय- ब्रह्मनिरूपण, जीवात्मा निरूपण, ब्रह्म और जीव में भेद, जगदुत्पत्ति में परमात्मा निमित्त कारण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई द्वितीय- (ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- तृतीयपाद व चतुर्थपाद

विषय- परमात्मा के अधीन प्रकृति उपादान कारण, परमात्मा की विभिन्न नामों से उपासना, उपासना व वेदाध्ययन में सब वर्णों का अधिकार इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई तृतीय- मीमांसा दर्शन- 1

मीमांसा दर्शन- प्रथम अध्याय प्रथम पाद (शाबरभाष्य सहित)

विषय- मीमांसा शब्द का अर्थ, धर्म का लक्षण, “चोदनालक्षणोऽर्थः धर्मः”, धर्म, विषयक जिज्ञासा- “अथातो धर्म जिज्ञासा”, धर्म का प्रमाण-(वेद), देहातिरिक्त आत्मा का अस्तित्व।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- मीमांसादर्शन (शाबरभाष्य सहित)

प्रकाशक- युधिष्ठिर मीमांसक, बहालगढ़, जिला- सोनीपत, हरियाणा।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।

परिणाम-1. वेदान्त व मीमांसा के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण

2. वेदान्त के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को अध्येता का परिचय।
3. वेदान्त के वास्तविक सिद्धान्तों का परिचय।
4. मीमांसा के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनिभाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, शांकरभाष्य। शाबरभाष्य व्याख्या -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-चतुर्थ

MD-CT-104 - वैदिकेतर दर्शन-1

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- महान दर्शन सम्प्रदायों के संग्रहकर्ता माधवाचार्य जी का जीवन अवबोध कराना।
- चार्वाक दर्शन के मूल सिद्धान्तों व विचारों के प्रति सहज बोध करवाना।
- बौद्ध दर्शन की मूल मान्यताओं, सम्प्रदायों व उपदेशों से परिचित कराना।
- जैन दर्शन की महत्ता व मोक्ष के विषयों से छात्रों को परिचित कराते हुए अन्य दर्शनों से इसकी विशिष्टता का बोध कराना।

इकाई प्रथम- चार्वाक दर्शन- माधवाचार्य के सर्वदर्शन संग्रह से चयनित दर्शन।

चार्वाक सिद्धान्तों का कण्ठस्थीकरण, अन्य नामों की मीमांसा, तत्त्व मीमांसा, प्रमाण विषयक चर्चा, वेदों की निस्सारता, सुख, मोक्ष, राजा व अन्य विषयों की चर्चा।

इकाई द्वितीय- बौद्ध दर्शन-

तदुत्पत्ति से अविनाभाव का ज्ञान-पंचकरणी, बौद्धदर्शन के चार भेद-ज्ञान के चार कारण, भावना चतुष्टय, क्षणिकत्व की भावना- अर्थक्रियाकारित्व, पंच स्कंध, चार सम्प्रदाय, चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, अष्टांगिक मार्ग, द्वादश आयतन, दुःख और स्वलक्षण की भावनाएँ।

इकाई तृतीय- जैन दर्शन-

बौद्ध दर्शन के सिद्धान्तों का खण्डन, त्रिरत्न, पञ्च महाव्रत, अर्हत मत की सुगमता, अर्हत का स्वरूप, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, तत्त्व मीमांसा, पुद्गल, बन्धन के कारण, बन्धन के भेद, संवर और निर्जरा, मोक्ष।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।

परिणाम-1. महान दर्शन सम्प्रदायों के संग्रहकर्ता माधवाचार्य जी के जीवन का परिचय।

2. चार्वाक दर्शन के मूल सिद्धान्तों व विचारों का परिचय।
3. बौद्ध दर्शन की मूल मान्यताओं, सम्प्रदायों व उपदेशों का परिचय।
4. जैन दर्शन की महत्ता व मोक्ष का विवरण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सर्वदर्शन संग्रह (माधवाचार्यविरचितम्)

प्रकाशक-चौखम्बा विद्याभवन, चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे), वाराणसी-221001

सहायक ग्रन्थ - भारतीय दर्शन का इतिहास, डॉ० दास गुप्ता, भारतीय दर्शन - डॉ० राधा कृष्णन्।

भारतीय दर्शन का इतिहास (चतुर्थ भाग), डॉ० जयदेव वेदालंकार।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-पञ्चम

MD-AEC01*-105- ENGLISH COMMUNICATION**

Objectives:

Unit 1- Improve pronunciation and Use English Grammar worksheets and exercises to improve grammatical knowledge for competitive exams

Unit 2- Enhance reading, understanding and writing abilities in English

Unit 3 -Develop the ability to read, understand and improve English vocabulary Unit 4 -

Demonstrate conversational skills, Asking Questions

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Unit-1: -Syllables (stress in simple words), Rhythm, Intonation, & Revision of Basic Grammar

- Tenses
- Prepositions
- Articles
- Conjunctions
- Modals
- Direct and indirect Speech

Unit-2: Reading & Writing

- Vocabulary- Homophones, Homonyms
- Analytical Skills
- Editing Skills- Error Correction
- Article Writing
- Reading Comprehension

Unit-3: Listening –

- Audio books
- Podcasts
- Speeches of various renowned Yoga Masters
- Ted Talks

Unit-4: - Spoken English

- Accents and dialects
- Extempore
- Oral Report,
- Debates and GDs
- Public Speaking Skills
- Leadership
- Team Work

Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

1. “ आयातित पाठ्यक्रम

पातञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-प्रथम

MD-CT-201 - सांख्य-योग-2

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्य व योग के मौलिक सिद्धांतों का परिचय कराना।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजता से हृदयङ्गम कराना।
- सांख्यकारिका के अर्थ एवं भाष्य को सरलतम विद्या से अवगत कराना।

इकाई प्रथम- सांख्यदर्शन -2

द्वितीय अध्याय (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

विषय- बहुश्रुत महिमा, सृष्टि प्रयोजन, महत्त्व के लक्षण का कथन, अहंकार लक्षण, अहंकार कार्य, इन्द्रियों के भौतिकत्व का खण्डन, ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के विषयों का कथन, बुद्धि की प्रधानता।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- सांख्यकारिका - 01 से 72 तक (गौडपाद भाष्य सहित)

विषय- सांख्य प्रतिपादित ज्ञान की उपादेयता, प्रमेयभूत 25 तत्त्वों का परिचय, त्रिविध प्रमाणों का निरूपण, विद्यमान पदार्थ की उपलब्धि व अनुपलब्धि में हेतु, गुणों का स्वरूप निरूपण, पुरुष बहुत्वम्, द्विविधा सृष्टि, बुद्धि का प्राधान्य सूक्ष्म शरीर निरूपण, बुद्धि सर्ग निरूपण, 28 अशक्ति, नवधा तुष्टि व आठ प्रकार की सिद्धियों का वर्णन, पुरुष के मोक्ष के लिए प्रकृति की प्रवृत्ति, तत्वाभास से ज्ञानोदय, सम्यक ज्ञान से मुक्ति।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यकारिका (गौडपाद भाष्य सहित)

प्रकाशक- 41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007,

अशोक राजपथ, पटना-800004 एवं चौक, वाराणसी-221001

इकाई तृतीय- योग दर्शन

साधनपाद, व्यासभाष्य सहित

विषय- क्रियायोग, पञ्च क्लेश, अविधा का स्वरूप, दृश्य व दृष्टा का स्वरूप, हेय-हेयहेतु, हान- हानोपाय, अष्टाङ्ग योग एवं उसका फल, प्राणायाम निरूपण, प्रत्याहार निरूपण इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्भा, सुरभारती, वाराणसी।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।

परिणाम-1. सांख्य व योग के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण।

2. सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।

3. सांख्यकारिका के अर्थ व भाष्य का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सडक दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द्र दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-द्वितीय

MD-CT-202- न्याय-वैशेषिक-2

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय व वैशेषिक के मौलिक सिद्धांतों से परिचित कराना।
- न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को सरलतम रीति से अवबोध कराना।
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के कतिपय प्रसङ्गों से अवगत कराना।
- तर्कसंग्रह के कतिपय प्रमुख प्रसङ्गों से परिचय कराना।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन

द्वितीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित।

विषय- संशय का लक्षण एवं परीक्षा, अनुमान परीक्षा प्रकरण, अर्थवाद, अनुवाद एवं विधिवाक्य निरूपण, प्रमाण चतुष्टय की अनुपपत्ति का पूर्वपक्ष, व्यक्ति, आकृति, जाति पदार्थवाद का निरूपण इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन, वात्स्यायनभाष्य सहित

प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि

शब्दबोध, शक्तिग्रह उपाय अभिधा चतुर्विध शब्दभेद लक्षणा, तात्पर्यज्ञान।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- पं. विश्वनाथ विरचिताः।

प्रकाशक- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर, समीप मैदागिन), वाराणसी-221001

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन-

तृतीय व चतुर्थ अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश।

विषय- इन्द्रियों के विषय, ज्ञानादिगुण-भौतिक देह के नहीं, हेत्वाभासों का निर्देश, मन की सिद्धि, आत्मा का लक्षण, आत्मा केवल आगमबोध्य नहीं, आत्मप्रकरण, कारण से कार्य का अनुमान मूल उपादान को अनित्य कहना अज्ञान है, गुणों का प्रत्यक्ष, गुण वैधर्म्य प्रकरण, रूप, रस गन्ध स्पर्श प्रकरण योनिज व अयोनिज दो प्रकार के शरीर, पृथ्वी के कार्य के भेद इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डी, तेलंगाना।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।

परिणाम-1. न्याय व वैशेषिक के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण।

2. न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय का परिचय।
3. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के कतिपय प्रसङ्गों का परिचय।
4. तर्कसंग्रह के कतिपय प्रमुख प्रसङ्गों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्याय दर्शन (डॉ० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), दुण्ढिराजशास्त्री। आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-तृतीय

MD-CT-203- वेदान्त-मीमांसा-2

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को अवगत कराना।
- मीमांसा न्याय प्रकाश के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों से हृदयङ्गम कराना।
- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों से परिचित करवाना।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन

(ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय – प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

विषय- जीवात्मा के कर्म वैचित्र्य से जगत वैचित्र्य, परमात्मा को हस्त आदि करणों की अपेक्षा नहीं, असत्कारणवाद निराकरण, साकार ईश्वरवाद का खण्डन।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन

(ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

विषय- भूतों व मन सहित इन्द्रियों की उत्पत्ति व लय का क्रम, जीवात्मा अनुत्पत्तिधर्मा, नित्यचेतन, अल्पज्ञ, अणु, कर्मकर्ता भोक्ता च, शरीर, प्राण व इन्द्रियों का उत्पत्तिकर्ता ईश्वर।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई तृतीय- मीमांसा न्याय प्रकाश-1

मीमांसान्यायप्रकाश (पूर्वार्द्ध)- आपदेव विरचित

विषय- धर्मलक्षण, विविध, भावना, वेदापौरुषेयत्व, वेद विभाग, विधि निरूपण, गुणविधि निरूपण, वाजपेयाधिकरण, गुणकर्माधिकरण, विधि भेद, वाक्यनिरूपण, प्रकरण निरूपण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- मीमांसान्यायप्रकाश- आपदेव विरचित न्यायबोधिनीहिन्दीव्याख्या सहित।

प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो. बाक्स नं.-1139, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन), वाराणसी-221001

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।

2. मीमांसा न्याय प्रकाश के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।
3. वेदांत के मौलिक सिद्धान्तों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- शाबरभाष्य व्याख्या- पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसा परिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)। वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनि भाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, शांकर भाष्य।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-चतुर्थ

MD-CT-204- वैदिकेतर दर्शन-2

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का ज्ञान कराना।
- प्रसिद्ध व प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों का भेद जानना।
- बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्त बोध कराना।
- पाश्चात्य दर्शन के इतिहास को भलीभांति जानना।

इकाई प्रथम- ग्रीक दर्शन (Philosophy)- सुकरात पूर्व दार्शनिक- थेलीज, एनेक्जमेंडर, एनेक्जिमेनीज, पाइथागोरस, हेरेक्लाइटस, पार्मेनाइडीज, सोफिस्ट।

सुकरात- दार्शनिक समस्या, सुकरातीय पद्धति, ज्ञान का सिद्धान्त, नैतिक दर्शन।

प्लेटो- ज्ञान मीमांसा, प्रत्यय सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मक पद्धति, ईश्वरीय विचार, सृष्टि विज्ञान।

अरस्तु- विज्ञान और दर्शन, तत्व मीमांसा, कारणता का सिद्धान्त, ईश्वर की धारणा।

(iii) लॉक, बर्कले और ह्यूम- प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धान्त, मानव स्वभाव की अवधारणा, प्राकृतिक अवस्था की अवधारणा, आत्मगत प्रत्ययवाद, आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी विचार, अनुभववाद, संशयवाद।

इकाई द्वितीय- (i) हेगल और कान्ट- सिद्धान्त, सत और चित्, ज्ञान की समस्या। अनुभवातीत पद्धति, इन्द्रिय-प्रत्यक्ष का सिद्धान्त, निर्णय की प्रामाणिकता।

(ii) स्पिनोजा और लाइबनिट्ज- पद्धति और ज्ञान, सार्वभौम द्रव्य, ईश्वर के विश्लेषण, प्रकारों का सिद्धान्त, मन और शरीर का सम्बन्ध।

शक्ति का सिद्धान्त, चिद्बिन्दुओं का सिद्धान्त, पूर्व स्थापित सामंजस्य, ईश्वर का स्वरूप।

(iii) कम्प्यूसियस का दार्शनिक चिन्तन- मानवतावाद, ईश्वर की अवधारणा।

इकाई तृतीय- पाश्चात्य दर्शन का इतिहास- प्राकृतिक दर्शन, सोफिस्टो का युग, यूनानी ज्ञानोदय, सुकरात के पश्चात का युग, नैतिक आन्दोलन, मध्यकालीन दर्शन, यथार्थवाद, नवजागरण का काल, आधुनिक दर्शन, यूरोपीयन बुद्धिवाद, अनुभववाद का विकास।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का विवरण।

2. प्रसिद्ध व प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों का परिचय।
3. बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्तों का विवरण।
4. पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का विवरण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा।

प्रकाशक- मोतीलाल, बनारसीदास, 41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007
चौक, वाराणसी, 221001, अशोक राजपथ, पटना- 800004

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-पञ्चम

MD-SEC01*-205 - योग विज्ञान**

(70+30=100)

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- 1) State techniques, health benefits, applications, precautions and contraindications of undermentioned yogic practices; &
- 2) To demonstrate and instruct undermentioned yogic practices.

Unit-I: Yogasana (Sitting Postures)

Dandasana, Swastikasana, Padmasana. Vajrasana, SuptaVajrasana, Kagasana, Utkatasana. Gomukhasana, Ushtrasana, Shashankasana, Janusirasana, Paschimottanasana, Bhramacharyasana, Mandukasana, Utthana, Mandukasana, Vakrasana, ArdhaMatsyendrasana, Marichayasana, Simhasana.

YOGASANAS (STANDING POSTURES]

Tadasana, Vrikshasana, Urdhva-Hastottanasana, Kati Chakrasana; ArdhaChakrasana, PaadaHastasana; Trikonasana, ParshvaKonasana; Veerabhadrasana

Prone Lying Asanas

Makarasana, Markatasana, Bhujangasana (1,2,3,4), Shalabhasana, Dhanurasana, Purnadhanurasana, Chakrasana, Viparit Naukasana.

Unit-II: Pranayama (With Antar & Bahya kumbhaka)

Bhastrika, Kapalbhathi, Bahya, Ujjai, Anulom-Vilom, Bhramari, Udgeeth and Pranav as recommended by Swami Ramdev.

Unit-III Mudra-

Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Vayu, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh, Kamajayi.

Unit-IV: SHATKARMAS

Dhauti, Basti, Neti, Nauli, Tratak, Kapalbhathi.

Unit-V: MEDITATION

Patanjali Ddhyam.

Continuous Evaluation by the Teachers

Outcomes-

- Students can perform and get benefited by yoga practions.
- Students can teach the proper praction to the masses.

TEXT BOOKS

1. Yogrishi Swami Ramdev Ji: Pranayama Rahasya, DivyaPrakashan, Haridwar, 2009
2. Science Studies Pranayam: Patanjali Research Foundation, Haridwar, 2011
3. Acharya Balkrishna: YogVijnanam, DivyaPrakashan, 2017.
4. Yogrishi Swami Ramdev Ji: Vedic Nityakarma Vidhi, DivyaPrakashan, Haridwar, 2010.

1. “ आयातित पाठ्यक्रम

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-प्रथम

MD-CT-301-सांख्य-योग-3

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- योग दर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्र के सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।

इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन-3

तृतीय अध्याय- (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

तत्त्वसमास सूत्र सर्वोपकारिणी वृत्ति सहित (सांख्यसंग्रह ग्रन्थ से)

विषय- महाभूत उत्पत्ति, संसारावधि का वर्णन, दो प्रकार के शरीरों का वर्णन, लिङ्ग शरीर व्यापारवर्णन, ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति, ज्ञान साधनों का वर्णन, प्रधान सृष्टि का प्रयोजन, पुरुष में बन्धन व मोक्ष का आरोप अवास्तविक, विवेक से कृत्यकृत्यता इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन-3

चतुर्थ अध्याय- (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

तत्त्वसमास सूत्र सर्वोपकारिणी वृत्ति सहित (सांख्यसंग्रह ग्रन्थ से)

“परिग्रहदुःखे श्येनाख्यायिका” विवेकासाधनचिन्तने बन्ध इत्यत्र भरताख्यायिका, नैराश्ये सुखमित्यत्र पिङ्गला दृष्टान्तः, अनारम्भे सारादाने च दृष्टान्तः, योगचर्याप्रयोजनवर्णनम्, वैराग्योपायावधारणम् इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई तृतीय- योग दर्शन-3

तृतीय पाद (विभूति पाद) व्यासभाष्य सहित।

विषय- धारणा, ध्यान, समाधि व संयम का निरूपण, परिणामत्रय का वर्णन, विभूति वर्णन, उदान, समान प्राण पर संयम करने का प्रतिफल, भूतजय एवं इन्द्रियजय से उत्पन्न सिद्धियों का वर्णन, विवेक ज्ञान का स्वरूप एवं कैवल्य योग इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्भा, सुरभारती, वाराणसी।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।

2. योगदर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।

3. सांख्यदर्शन व योगदर्शन के सूत्रों का विवरण।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-द्वितीय

MD-CT-302- न्याय-वैशेषिक-3

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना एवं तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद भाष्य का बोध कराना।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन-3

तृतीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित

विषय- इन्द्रियशरीर आदि से व्यतिरक्त आत्मा का निरूपण, आत्मनित्यत्व परीक्षा, शरीर परीक्षा प्रकरण, इन्द्रिय परीक्षा प्रकरण, अर्थ परीक्षा प्रकरण, मन के अविभुत्व का उपपादन, बुद्धि के आत्मगुणत्व की परीक्षा, आत्मा में इच्छादि गुणों के समवाय का प्रतिपादन, स्मृति के निमित्तों का विवरण, मनः परीक्षा प्रकरण, शरीर की उत्पत्ति में अदृष्ट की कारणता का उत्पादन इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन- वात्स्यायनभाष्य सहित,

प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन-3

पञ्चम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

विषय- पृथ्वी के समान जल तेज और वायु में कर्म, सुखादि की उत्पत्ति के कारण, योग का स्वरूप, मोक्ष का स्वरूप, दिक्काल, आकाश, गुण व कर्म में क्रियाहीनता, कर्म पदार्थ निरूपण, समवायी असमवायी कारण इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन-3

षष्ठ व सप्तम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

षष्ठाध्याय- वेदों में वाक्य रचना ज्ञानपूर्वक, वेदों में दानक्रिया बुद्धिपूर्वक, निषिद्ध भोजन से वैदिक सत्कर्मों द्वारा भी अभ्युदय नहीं, अन्त्यों को कष्ट देकर प्राप्त उपभोग दोषपूर्ण, समाज में पारस्परिक सहयोग का आधार, मानव में बुराई भलाई, शुचि और अशुचि का स्वरूप, धर्माधर्म प्रकरण, रागद्वेष का कारण, इच्छाद्वेषप्रयत्न प्रकरण, मोक्ष का उपाय इत्यादि।

सप्तमाध्याय- गुण परीक्षा, पाकज प्रकरण, परिमाण परीक्षा, अणुमहत् व्यवहार, परमाणु निरूपण, परिमाण प्रकरण, पृथक्त्व प्रकरण, संख्या प्रकरण, संयोग प्रकरण, विभाग प्रकरण, परत्वापरत्व प्रकरण, समवाय पदार्थ इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय का परिचय।

2. वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाषा अर्थ का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्याय दर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), दुण्डिराजशास्त्री, आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर) प्रश्नपत्र-तृतीय MD-CT-303- वेदान्त-मीमांसा-3

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- मीमांसान्याय प्रकाश के उत्तरार्द्ध से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कंठस्थ कराना।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन-3

तृतीय अध्याय - प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

विषय- सूक्ष्म शरीर के साथ जीवात्मा का प्रयाण एवं पुनर्जन्म वर्णन, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था का वर्णन, योगाभ्यास से परमात्मतत्त्व की प्राप्ति तथा उसके साथ तादात्म्य सम्बन्ध, ब्रह्म के साथ नितान्त अभेद व विशिष्ट अभेद का खण्डन, जीवात्मा के कर्मफल का प्रदाता परमात्मा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन-3

तृतीय अध्याय - तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

विषय- सभी उपनिषदों में केवल एक ब्रह्म ही उपास्य है, देवयान मार्ग से मोक्ष प्राप्ति, संन्यास आश्रम ब्रह्म प्राप्ति के लिए, शम, दम आदि साधन के साथ स्वाश्रम कर्मों का अनुष्ठान, संन्यासी को अवर आश्रम में लौटने का विकल्प नहीं। मोक्ष प्राप्ति में अनेक जन्मों के प्रतिबन्ध का खण्डन इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई तृतीय- मीमांसा न्यायप्रकाश-2

मीमांसान्यायप्रकाश (उत्तरार्द्ध)

विषय- मंत्र प्रयोजनम्, अपूर्व विधि निरूपण, परिसंख्या कर्म, नामधेय निरूपण, पर्युदास निरूपण, अर्थवाद निरूपण, शाब्दीभावना, आर्थीभावना,

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- मीमांसान्यायप्रकाश- आपदेव-विरचित न्यायबोधिनी-हिन्दीव्याख्यासहित।

प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो. बाक्स नं.-1139, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन), वाराणसी-221001

अथवा

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- वेदोक्त धर्म **विषय-** (सौमनस्योपदेश, सत्याचरण विधान, धर्म लक्षणों का वर्णन), **उपासना विषय-** (वेद मंत्रों के द्वारा उपासना विधान, योगशास्त्रानुसार उपासना, उपनिषदानुसार सगुण-निर्गुण, उपासना भेद), **मुक्ति विषय-** वेद, दर्शन, उपनिषादि में मुक्ति का विषय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- महर्षि दयानन्द सरस्वती।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. वेदान्त दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाषार्थ का परिचय।

2. मीमांसान्याय प्रकाश के उत्तरार्द्ध का परिचय।

3. वेदान्त दर्शन व मीमांसान्याय प्रकाश के प्रमुख संदर्भों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य, विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, शाबरभाष्य व्याख्या, -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर) प्रश्नपत्र-चतुर्थ MD-CT-304- वैदिकतर दर्शन-3

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सर्वदर्शन संग्रह में उपलब्ध दर्शनों का सम्यक् बोध एवं शैव दर्शन की अपेक्षाकृत कम प्रचलित प्रत्यभिज्ञा दर्शन के विषय में जानना।
- द्वैत दर्शन में सिद्धान्तों का परिचय व स्पष्टता।
- महर्षि पाणिनी विरचित ग्रंथों का महत्व व व्याकरण के प्रयोजन को जानना।

माधवाचार्य के सर्वदर्शन संग्रह से चयनित दर्शन।

इकाई प्रथम- पाणिनीय दर्शन- व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन, अभ्युदय और निःश्रेयस, स्फोटवाद।

इकाई द्वितीय- मध्वदर्शन (द्वैत दर्शन)- निर्गुण ब्रह्म व माया का निराकरण, भेद एवं साक्षी, भक्ति।

इकाई तृतीय- प्रत्यभिज्ञा दर्शन- शैव दर्शनों का परिचय, मोक्ष, परमशिव की अवधारणा, कश्मीरीय शैव दर्शनों का महत्व त्रिक विद्या।

इकाई चतुर्थ- भारतीय दर्शन का इतिहास

इकाई पञ्चम- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. सर्वदर्शन संग्रह में उपलब्ध दर्शनों का सम्यक् परिचय।

2. द्वैत दर्शन में सिद्धान्तों का परिचय।

3. महर्षि पाणिनी विरचित ग्रंथों व व्याकरण का परिचय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सर्वदर्शन संग्रह (माधवाचार्य)।

प्रकाशक-चौखम्बा विद्याभवन, चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे), वाराणसी-221001

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-पञ्चम

(भाषा विज्ञान/मनोविज्ञान/ गुप्तकाल का इतिहास-1)

MD-GE*-305-भाषा विज्ञानं व्याकरणञ्च

(70+30=100)

पाठ्यक्रम उद्देश्यः (Course Objective)

- अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा भाषा विषयकं तुलनात्मकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य ज्ञानार्थं संस्कृत व्याकरणध्ययनम् आवश्यकं भवति तद् प्रयोजनमपि सेत्स्यति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति, तद् ज्ञानमपि प्राप्तुं छात्राः समर्थाः भविष्यन्ति।

(क) भाषा विज्ञानम्

इकाई प्रथम- भाषा विज्ञानस्य परिचयः

भाषायः परिभाषा, उत्पत्तिः, विकासश्च। भाषापरिवर्तनं तद्भेदाश्च। भाषापरिवर्तनस्य कारणानि। भाषापरिवारः। भारोपीयपरिवारस्य भाषागताः प्रमुखाः शाखाः तद्वैशिष्ट्यानि च। परिवारमूलकम् आकृतिमूलकं च भाषाणां वर्गीकरणम्। संस्कृतभाषा वैदिकी लौकिकी च।

इकाई द्वितीय- अर्थ विज्ञानम् अर्थ परिवर्तनञ्च अर्थ विज्ञानम्- अर्थ परिवर्तनस्य कारणानि दिशश्च

इकाई तृतीय- भाषा विज्ञानेतिहासः भाषाविज्ञानेतिहासः- प्राचीनः भाषावैज्ञानिकाः पाणिनिः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, यास्कः, भाषाविज्ञान- व्याकरण- निरूक्तानां परस्पर सम्बन्धः।

(ख) व्याकरणम्

इकाई चतुर्थ- सन्धिः, कारकः, समास प्रकरणम्,

(ग) संगणक विज्ञानम्

इकाई पञ्चम- D.B.M.S., HTML परिचयोऽनुप्रयोगश्च-

DBMS (Database Management system), Web Technology (HTML), Programming Language

(C) म् इत्येषां सामान्यपरिचयोऽनुप्रयोगश्च।

Digital पुस्तकालयस्य परिचयः, टङ्कणाभ्यासः (यूनिकोडफॉण्ट-माध्यमेन)

इकाई षष्ठ- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्यक्रम परिणाम: (Course Outcomes)

अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा

- भाषायाः उत्पत्तिं परिवारं निरूपयन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य अर्थप्रयोजनपूर्वकं प्राचीनभाषाविज्ञानस्य निरूपणं संस्कृतव्याकरणादिना सह सम्बन्धनिरूपणम् च कुर्वन्ति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति तत् परिचयं च कुर्वन्ति।

संस्तुतग्रन्थाः-

1. भाषाविज्ञानम्- कर्णसिंहः।
2. सामान्य भाषा-विज्ञान-बाबूराम सक्सेना।
3. भाषा और भाषिकी, देवीशंकर द्विवेदी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी- (वरदराज), भैमीव्याख्या- व्याख्याकार भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

Course Objectives:

- To recognize what contributes/does not contribute to happiness.
- To understand the right kind of vocation relationship and values in life that enhances one's well-being
- To recognize the role of positive emotions and traits in enhancing happiness.

Course contents

1. **Introduction: Concept of positive psychology**, historical and philosophical traditions: western influence: Athenian and Judeo-Christian traditions, eastern influences: Confucianism, Taoism, Buddhism and Hinduism
2. **Resilience:** meaning and definition of resilience, the roots of resilience research, resilience recourses, positive youth development, successful aging, strategies for promoting resilience in children and Youth.
3. **Emotional Intelligence:** Salovey & Mayer's ability model of emotional intelligence (E.I), emotion focused coping and adaptive potential of emotional approaches, life enhancement strategies
4. **Self-efficacy:** definition, childhood antecedents, the neurobiology of self efficacy, self-efficacy's influence in life areas.
5. **Optimism:** definition, childhood antecedents of learned optimism, the neurobiology of optimism and pessimism, what learned optimism predicts.

Course Outcomes:

After the completion of this course students will be able to

- To understand the scientific significance of human qualities.
- To cooperate in the development of ourselves and the society.

Reference Books:

1. Snyder, C.R., & Lopez, S.J. (2002) Handbook of positive Psychology. New York: Oxford University.
2. David, S, A., Boniwell, I & Ayers, A.C. (2013) The oxford handbook of happiness. Oxford: Oxford Universi.

Text Book:

3. Kumar, V., Archana, & Prakash, V. (2015). Positive Psychology-Application in work, health and well-being. Delhi& Chennai, India:Pearson.

1. " आयातित पाठ्यक्रम

अथवा

MD-GE*-307- गुप्तकाल का इतिहास-1

Guptas: The Golden Period of Indian History

(70+30=100)

Course Objectives-

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from the post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

Unit I: Political History of Gupta Period

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- Shri Gupta and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

Unit II: Political History of Gupta Period

Achievements Chandragupta Vikramaditya, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

Unit III: Social status in Gupta Period

Social system - Varna system, institution of marriage, types of marriage, status of women, rights of women in property, widow marriage, clothes and jewellery, clothes of sanyasins, social life, Atithi Satkar, means of entertainment.

Unit IV: Economic system of Gupta period –

Development of agriculture, use of new sources of irrigation, development of industries, development of means of transport, banking system, economic standard of living of common people, urban and rural life.

Unit V: Education system in Gupta period

Education system, Gurukul education system, Buddhist education system, Centre of Education- Kashi Taxila, Nalanda, Valabhi. Guru-Shishya relationship, curriculum, qualification of the Guru, qualification of the Shishya, rules of admission in Gurukul, women's education, development of writing skills, writing material.

Course Outcome:

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

Recommended Readings:

Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,

Sharma, L.P.: History of Ancient India,

Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,

Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016

Basham A. L. The Wonder that was India, London

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Majumdar, R.C. and A.S. Altekar, The Gupta-Vakataka Age (Also in Hindi), Chapters 1, 11 and 14, London, 1946.

Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. III and IV (relevant chapters), Bombay, 1988 and 1980. Lucknow, 1973.

Ray, H.C., Dynastic History of North India, Delhi, 1960.

Tripathi, R.S., Ancient India (English and Hindi), Delhi, 1960.

Tripathi, R.S., History of Kannauj to the Moslem Conquest, Delhi, 1959.

Upadhyaya, Vasudeo, Gupta Samrajya Ka Itihasa (Hindi), Prayag, 1939.

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-षष्ठ

MD-SEC02*-306 - भारतीय संगीत (गायन)**

Paper Name– THEORY AND PRACTICAL OF VOCAL

(70+30=100)

Objective:-

Theory-

This module is prescribed to appraise to learn the theoretical knowledge of Sangeet its Basic's , Alankaar , Aroh Avroh Pakad, Lakshan geet.

Origin of Music Alankaar according to Bhatkhande swarlipi Paddhati, Bhajan UOP Koolgeet etc.

Practical-

Student Can able to practice Khadaj Swar , AUM in proper Musical Way, Twenty Alankaar's, one chota khayal Madhya Laya in Raag – Bhairav.

THEORY

UNIT- I Definitions :- Sangeet, Dhvani , Nada , Swara , Saptak , Alankar, Laya , Sama, Taal , Vadi, Samvadi , Vivadi , Anuvadi, Aroh , Avroh , Pakad, Khayal , Sthai , Antra, Thaata & its Names , Raag, Alaap, Jaati , Bhajan, Lokgeet, Lakshan Geet , Thumri. Brief Parichay of Raag Bhairav.

UNIT- II Origin of Sangeet , Origin of Sound, Twenty Alankars According to Kramik Pustak Malika, Swarlipi Paddhati of Vishnu Narayan Bhatkhande & Vishnu Digambar Palushkar , Relation Between Life & Music, UOP (Koolgeet, Yagya Prarthna) , Five Swastivachan Mantra Two Patriotic Song , Three Arya Samaj Bhajan, Biography of Musician Tansen.

PRACTICAL

UNIT- III - Practice of Twelve Swar in Saptak, Practice of om in Khadaj swar, Twenty Alakaarr according to Kramik pustak Malika-I, Practice of one Chota Khyal in Raag Bhairav in Madhya Laya. Two Taan in Raag Bhairav.

UNIT-IV- Practice of Koolgeet, Yagya Prarthna, Five Swastivachan Mantra, Two Patriotic Song, Three Arya Samaj Bhajan with two Sargam each in Related Bhajan, One Hori Song.

Outcome-

Got the Knowledge to Sing Basic Swar's , Alankaar's , Bhajan's, Swastivachan Mantra , Patriotic Songs, Raag Bhairav Chhota khayal in a Classical way.

1. “ आयातित पाठ्यक्रम

Paper Name– THEORY AND PRACTICAL OF INSTRUMENTAL

(70+30=100)

Objective-

This module is prescribed to learn basic Structure of Harmonium, Tabla Some Definitions Related to Swar & Taal.

Practical :- Can Able to Practice UOP koolgeet Patriotic Song & Bhajan's On Harmonium .

Can Able to Practice Kayda in Teentaal , Bols in Dadra & Kehrwa.

UNIT- I- Harmonium- Structural knowledge of Harmonium, Theoretical knowledge of Twelve Swar in Saptak

UNIT- II- Tabla – Structural knowledge of Tabla,

Basic Definitions:- Mantra, Vibhayg, Laya, Sama, Khali, Writing knowledge of Taal:- Dadra, Kehrwa, Teentaal in Thah & Dugun.

PRACTICAL

UNIT- III- Harmonium- Practice of UOP Koolgeet, Yagya Prarthnas, five Swastivachan, One Patriotic song, Three Arya Samaj Bhajan.

UNIT-IV- Tabla – Two Kayda in Teental, Practice skill in Dadra and Kehrwa.

Outcome-

Got the Knowledge to play Bhajan's, UOP koolgeet , Swastivachan mantra , yagya prarthna on Harmonium.

Tabla :- Abled to play kayda in Teentaal , Dadra & kehrwa.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part -1 - Rajkishor Prasad Sinha(Author)
2. Raag Parichaya Part -1 – Harishchandra Srivastava(Author)
3. Sangeet prasnottar Part-1
4. Taal Parichaya -1- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Tabla Prashnotari Part-1- Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part -1 – V. N. bhatkhande
8. Also Books Recommended by Teacher.

1. “ आयातित पाठ्यक्रम

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-प्रथम

MD-CT-401- सांख्य-योग-4

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्यदर्शन के परपक्ष निर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को जानना।
- योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन-4

पञ्चम अध्याय (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

विषय- असंग परमेश्वर का अविद्या शक्ति के साथ सम्बन्ध असंभव, धर्माधर्म के प्रमाण का कथन, सुखादि की सिद्धि में अनुमान के पञ्चावयव का प्रयोग वेदों के पौरुषेयत्व का खण्डन एवं स्वतः प्रामाण्य व्यवस्थापन, स्फोटवाद का खण्डन, आत्मानात्म अभेद में बाधक कथन, आनन्द आत्मा का स्वरूप है इसका खण्डन, परमाणु के नित्यत्व का खण्डन, इन्द्रियों के अभौतिकत्व का व्यवस्थापन, समाधि, सुषुप्ति और मोक्ष की एकरूपता, भूतचैतन्यवाद का खण्डन।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन-4

षष्ठ अध्याय (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

विषय- दुःखनिवृत्तिमात्र ही पुरुषार्थ है, बन्ध और मोक्ष के कारण का निरूपण, योग साधना का वर्णन, पुरुष बहुत्व व्यवस्थापन, उपाधि भेद से बन्ध-मोक्ष व्यवस्था का खण्डन, प्रकृति पुरुष का भोग्य भोक्तृभाव का अनादित्व स्थापन इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)

प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001

इकाई तृतीय- योग दर्शन-4

चतुर्थ पाद

(कैवल्य पाद) व्यासभाष्य सहित

विषय- समाधि के प्रकार, चतुर्विध कर्म, हेतु फल आश्रय के आलम्बन के अभाव से दोषों का अभाव, धर्ममेघ समाधि का स्वरूप, क्लेश कर्म, निवृत्ति व उसका फल, गुणों की परिसमाप्ति, कैवल्य योग इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्भा, सुरभारती, वाराणसी।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

- परिणाम-**1. सांख्यदर्शन के परपक्ष निर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
2. योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
3. सांख्यदर्शन व योगदर्शन के प्रमुख संदर्भों का विवरण।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार
एम.ए. दर्शन
द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)
प्रश्नपत्र-द्वितीय
MD-CT-402- न्याय-वैशेषिक-4

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना, साथ ही तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद का बोध कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन - 4

चतुर्थ अध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित)

विषय- प्रकृति, दोष व प्रेत्यभाव परीक्षण, सर्व अनित्यवाद तथा उसका खण्डन, फल परीक्षा प्रकरण, तत्त्वज्ञानोत्पत्ति प्रकरण, अव्ययी प्रकरण, तत्त्वज्ञानपरिपालन प्रकरण इत्यादि।

इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन - 4

अष्टम, नवम् व दशम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

विषय- आत्मा और मन अप्रत्यक्ष, ज्ञानोत्पत्ति कैसे?, सामान्य विशेष के ज्ञान से द्रव्यादि का ज्ञान, "अर्थ" शब्द ग्राह्य= (द्रव्य, गुण, कर्म), घ्राण का उपादन पृथ्वी, अभाव का स्वरूप, अभाव का प्रत्यक्ष, लैङ्गिक ज्ञान व शब्द ज्ञान का विवरण, स्मृतिज्ञान के कारण, संस्कार प्रकरण, अविद्या के कारण व उसका स्वरूप, विद्या का स्वरूप, सुख दुःख का विवेचन, ज्ञानादि से अतिरिक्त आत्मगुण हैं, सुख-दुःख प्रकरण, समवायी, असमवायी कारण, दृष्ट-अदृष्ट पदार्थ ज्ञान एवं प्रयोग, अभ्युदय का प्रयोजक इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

इकाई तृतीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्ष खण्ड)-

मङ्गलवाद, सप्तपदार्थ, द्रव्यजाति साधन, गुणनिभाग, कर्मविभाग, सामान्य निरूपण, विशेष निरूपण समवाय निरूपण, अभाव निरूपण, कारण निरूपण, अन्यथासिद्ध निरूपण, पृथ्वयादिद्रव्य निरूपण, काल दिक्आत्मनोनिरूपण, प्रत्यक्ष लक्षण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- पं. विश्वनाथ।

प्रकाशक- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर, समीप मैदागिन), वाराणसी-221001

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।

2. वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।
3. वैशेषिक दर्शन के अष्टम्, नवम् तथा दशमाध्याय के प्रशस्तपाद का परिचय।
4. न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन के प्रमुख संदर्भों का वाचन।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्यायदर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), दुण्ढिराजशास्त्री। (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-तृतीय

MD-CT-403- वेदान्त-मीमांसा-4

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- मीमांसा दर्शन के षड्विधप्रमाणों का बोध कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के सन्दर्भों को कण्ठस्थ कराना।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन-4

चतुर्थ अध्याय - प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

विषय- जीवनपर्यन्त एकाग्रतादि साधन के द्वारा परमात्मा का ध्यान, प्रतीक उपासना का निषेध, उपासना से परमात्मा का साक्षात्कार होने पर पापों का असंस्पर्श तथा पुण्यकर्मों का फल।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन-4

चतुर्थ अध्याय - तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

विषय- मरण काल में सर्वेन्द्रिय-शक्तियों का सूक्ष्म शरीर में लीन होना, ब्रह्मोपासक योगी का सहस्रार चक्र के माध्यम से उत्क्रान्ति तथा ब्रह्मलोक गमन, देवयान मार्ग से ब्रह्मलोक गमन मुक्ति में सूक्ष्म शरीर का वर्तमानत्व व स्वप्नवत व्यवहार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

इकाई तृतीय- मीमांसा दर्शन-4

अर्थ संग्रह- विधि एवं अर्थवाद, श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान व समाख्या की समीक्षा।

तन्त्र निरूपण, आवाप निरूपण व प्रसंग निरूपण समीक्षा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- अर्थ संग्रह- श्रीलौगाक्षिभास्कर कामेश्वरनाथ मिश्र, हिन्दी व्याख्याकार

चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।

परिणाम-1. वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।

2. मीमांसा दर्शन के षड्विधप्रमाणों का विवरण।

3. वेदान्त दर्शन व मीमांसा दर्शन के प्रमुख सन्दर्भों का विवरण।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनिभाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, शांकर भाष्य, शाबरभाष्य व्याख्या- पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-चतुर्थ

MD-CT-404- वैदिकेतर दर्शन-4

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सर्वदर्शन संग्रह के अन्तर्गत ब्रह्मसूत्र पर आधारित रामानुजाचार्य जी द्वारा स्थापित विशिष्टाद्वैत दर्शन व शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित अद्वैतदर्शन के विचारों व सिद्धान्तों का परिचय व अवगाहन।

माधवाचार्य के सर्वदर्शन संग्रह से चयनित दर्शन।

इकाई प्रथम- शंकराचार्य एवं रामानुजाचार्य का ग्रन्थ परिचय।

इकाई द्वितीय- शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन- अद्वैतवाद, ब्रह्मविचार, सत्तात्रैविध्य, अध्यास, माया, जीव, विवर्तवाद, अनिर्वचनीय ख्यातिवाद।

इकाई तृतीय- रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतदर्शनम्- विशिष्टाद्वैतदर्शन में सगुण ब्रह्म, माया का निराकरण, अनुपपत्ति, अपृथकसिद्धि, परिणामवाद, पञ्चीकरण, जीव सम्बन्धी विचार।

इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों की आन्तरिक परीक्षा।

परिणाम-1. शंकराचार्य जी के ग्रन्थों का परिचय।

2. रामानुजाचार्य जी के ग्रन्थों का परिचय।

3. शंकराचार्य के अद्वैतदर्शन का विवरण।

4. रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैतदर्शनम् का परिचय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सर्वदर्शन संग्रह (माधवाचार्य विरचित)।

प्रकाशक-चौखम्बा विद्याभवन, चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे), वाराणसी-221001

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-पञ्चम

(संस्कृत साहित्य/मनोविज्ञान/गुप्तकाल का इतिहास-II)

MD-GE*-405 -संस्कृत साहित्य-

(70+30=100)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाओं का विशद् रूप से परिचय कराना।
- ओंकार की महिमा समझाना, पंचकोशों का ज्ञान कराना तथा अन्न की महिमा का बोध, सृष्टि उत्पत्ति का विषय समझाना।
- श्रीमद्भगवद्गीता के गुणत्रय विभागयोग तथा पुरुषोत्तम योग को समझाना।
- मंत्र व श्लोकों का कण्ठस्थीकरण कराना।

इकाई प्रथम- तैत्तिरीयोपनिषद्- (शिक्षा वल्ली)- परमेश्वर प्रार्थना, वर्णोच्चारण ऋत, सत्य, अध्यात्म, आधिदैविक पंचक, आधि भौतिक पंचक, विभिन्न लोगों का वर्णन, व प्राप्ति का उपाय, ओंकार की महिमा।

इकाई द्वितीय- (ब्रह्मानन्दवल्ली)- सृष्टि उत्पत्ति, पंचकोश, सत्-असत्, आनंद की महिमा।

(भृगु वल्ली)- ब्रह्म स्वरूप, अन्न का महत्व, भार्गवी, वारुणी विद्या का महत्व व फल।

इकाई तृतीय- ऐतरेयोपनिषद्- सृष्टि रचना क्रम का वर्णन, गर्भ का वर्णन, वैदिक व लौकिक कर्म, परमात्मा के विभिन्न नाम, प्रज्ञान स्वरूप, अमृतत्व।

इकाई चतुर्थ- गीता- (चतुर्दशोऽध्याय (गुणत्रयोविभागयोग)- ज्ञान की महिमा, प्रकृति-पुरुष व जगत उत्पत्ति का वर्णन, सत्, रज, तम, तीनों गुणों का विषय, भगवत् प्राप्ति का मार्ग, गुणातीत पुरुष के लक्षण।

इकाई पञ्चम- गीता- पञ्चदशोऽध्याय (पुरुषोत्तमयोग)- संसारवृक्ष का यथार्थ स्वरूप, भगवद् प्राप्ति का उपाय, जीवात्मा का स्वरूप, परमेश्वर का स्वरूप व प्रभाव, क्षर-अक्षर का स्वरूप।

परिणाम-

- तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाओं का विशद् रूप से अध्ययन।
- ओंकार की महिमा समझाना, पंचकोशों का ज्ञान कराना तथा अन्न की महिमा का बोध, सृष्टि उत्पत्ति का परिचय।
- श्रीमद्भगवद्गीता के गुणत्रय विभागयोग तथा पुरुषोत्तम योग का परिचय।
- मंत्र व श्लोकों का वाचन।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- उपनिषद्- एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार,
प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल-डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-48
गीता- श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत- स्वामी रामदेव जी, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार
सहायक ग्रन्थ - उपनिषद् रहस्य- महात्मा नारायण स्वामीजी, पण्डित भीमसेन शर्मा।
प्रकाशक- श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राजस्थान)-322230
एवं उपनिषद् संदेश, प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

अथवा

MD-GE*-406 -मनोविज्ञान-2**

(70+30=100)

Objectives:

- To gain the knowledge about guidance and counseling
- Importance of counseling in real life.

Course contents:

Unit 1: Counselling Psychology: Nature of counselling psychology, the Counsellor as a Role Model, The Counsellor's Needs, Emotional Involvement, and Counsellor Limits in Practice and ethical issues in counselling. Difference between counselling and Psychotherapy.

Unit 2: Expectations and goals of Counselling: Goals and expectations, Process, Basic Counselling Skills: Observation Skills, Questioning, Communication Skills (Listening, Feedback, Non-Verbal), Making Notes and Reflections, Role and functions of the counsellors.

Unit 3: The Counselling Interview: History Taking, Interviewing (Characteristics, Types, Techniques), Developing Case Histories: Collecting, Documenting Information, Working with Other Professionals

Unit 4 : Areas of Counseling: Educational, Career, Family and Martial, counseling in community centers, counseling in community centers

Unit 5 :_Ethics in Counselling: Need for Ethical Standards , Ethical Codes and Guidelines , Rights of Clients , Dimensions of Confidentiality.

Course Outcomes:

After the completion of this course students will be able to

- Provide adequate solutions of the problems.
- Assist Clinical Psychologist & Psychiatrists in assessment and treatment.

Reference Books:

1. C.J. Gelso and B.R. Fretz (1995). Counseling Psychology. Bangalore: Prism Books Pvt. Ltd.
2. A. David (2004). Guidance and Counseling. New Delhi: Common Wealth Publishers.
3. S. Gladding (2009), Counseling: A Comprehensive Profession, New Delhi: Pearson Education.
4. T.S. Sodi and S.P. Suri (2006). Guidance and Counseling. New Delhi: Tata McGraw Hill.
5. S.T. Gladding (2009) Counseling. New Delhi: Dorling Kindersley Pvt. Ltd.

Text Books :

6. V.R. Patri (2001): Counseling Psychology, New Delhi: Authors Press.
 7. S.N. Rao (2002). Counseling and Guidance, New Delhi : McGraw Hill
- Amarnath Rai and Madhu Asthana (2006). Guidance and Counselling. Varanasi: MotilalBanarasidas.

1. " आयातित पाठ्यक्रम

Concept of Greater India

Objective :

This course introduces the students how India's society, religions and culture undergoes a sea change during the Gupta Period. This course aims to acquainting students with cultural background, development in Languages, Literature and Arts and Architecture in Early India. It makes them clear that Indian culture is an amalgamation of several cultures. Further, it helps to inculcate the social and moral values among the students. The course covers ancient religious architectures- rock cut and structural, temples, sculptures and the literature on painting from different regions of India from the given period. The course aims to introduce the students to ancient India art, related major sites and structures.

Unit I: Religious Status in the Gupta Period

(15 Lect.)

Vedic Religion- Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kuber, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yagya. public beliefs and rituals. **Puranic Religions:** **Shaivism:** Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalika Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, **Bhakti Tradition,** **Vaishnavism:** Panchratr, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Tridevian-Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

Unit II: Literary and Creator

(13 Lect.)

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

Unit III: Development of Art

(12 Lect.)

Music and theatre, Amazing development of sculpture- Metal idols, Terracotta, Clay pieces, coins of Gupta rulers, Pots, Architecture- architecture in caves, Buddhist Vihara, Stupas and Pillars, Durg and Raj Prasad, Ordinary Residence, Vapi, Coupe, Tadag etc. various dimensions of painting, Styles of Painting - Ajanta Painting

Unit IV: Foreign Expansion of Gupta Culture

(10 Lect.)

Relations with China-State goodwill, development of printing arts, relations with Afghanistan, contacts with western countries, relations with eastern countries such as Kamboj, Champa, Varma, Java, Sumatra, Bali and relations with Central Asia

Unit V: Concept of Golden Period

(10 Lect.)

Learning Outcomes:

After the completion of the course, Students will be able to know about the richness of the Indian culture during the ancient period. They will understand the basic concepts associated with the different aspects of socio-cultural life of the above mentioned period. They will understand the Hindu religious movements, customs, traditions, languages, literature, art and architecture. They get to know how culture of Hindu society influenced that of the other contemporary civilizations.

Recommended Readings:

Upadhyay B.S. Gupta Kal Ka Sanskritik Itihas, Hindi Samiti, Lucknow, 1969

Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. II and III (relevant chapters.), Bombay, 1951-57.

Agrawala, P.K., Prācīna Bhāratīya Kalā evam Vāstu (Hindi), Varanasi, 2002.

Agrawala, V.S., Bhāratīya Kalā (Hindi), Varanasi, 1994.

Bajpai, K.D., Bhāratīya Vāstukalā kā Itihāsa (Hindi), Lucknow, 1972.

Brown, P., Indian Architecture (Buddhist and Hindu Periods), Vol. I, Bombay, 1971. . . 34

Coomarswamy, A.K., History of Indian and Indonesian Art, London, 1927.

Gupta, P.L., Bhāratīya Sthāpatya (Hindi), Varanasi, 1970. Roy, N.C., The Rise and Fall of Pataliputra, Kolkata, 2003.

Basham A. L. The Wonder that was India, London.

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र-षष्ठ

MD-AEC02-406- लघु शोध लेखन

एम.ए. दर्शन में पठित विषय से सम्बन्धित किसी एक विषय पर सृजनात्मक व प्रामाणिक लघु शोध लेखन

पाठ्यक्रम के उद्देश्य- दर्शन विषय के उत्कृष्ट शोध का प्रारम्भ करना, शोध की प्रवृत्ति/रुचि को जागरित कराना। तथा लेखन व शोधन की तकनीक से परिचय कराना।

यथा-

शास्त्रीय निबन्धाः

भारतीयदर्शनानां महत्त्वम्, दर्शनेषु प्रमाणानि।

नास्ति साख्यसमं ज्ञानम्, योगाङ्गानि, पदार्थाः, ब्रह्मस्वरूपम्, जीवस्वरूपम्।

दर्शनशास्त्रप्रणेतृणां परिचयः, दर्शनानां मुख्यप्रतिपाद्यविषयाः- अविद्या, बन्धकारणानि

षड्दर्शन-समन्वयः, मोक्षस्वरूपम्, यज्ञस्वरूपम्।

अथवा

भारतीय नीतिदर्शन एवं भारतीय तर्कशास्त्र।

उपरोक्त विषयों से अतिरिक्त दर्शनशास्त्र से सम्बद्ध किसी रचनात्मक विषय का चयन भी छात्र अपनी रुचि व योग्यतानुसार कर सकते हैं।

नोट : लघु शोध लगभग 30-50 पृष्ठ में हो।

परिणाम- 1. दर्शन विषय के उत्कृष्ट शोध का प्रारम्भ करना, शोध की प्रवृत्ति/रुचि का परिचय।

2. लेखन व शोधन की तकनीक से परिचय कराना।